Compulsory National Service for Students

+

*577. **Shri Yashpal Singh:**
Shri Ram Sewak Yadav:

Will the Minister of **Education** be pleased to state:

(a) whether Government have taken any decision regarding the scheme to introduce compulsory national service for students; and

(b) if so, the details thereof?

The Deputy Minister in the Ministry of Education (Shri Bhakt Darshan): (a) and (b). The matter is under consideration.

श्री यशपाल सिंह : कुछ यह पता नहीं लगा सरकार की नीति का कि राष्ट्रीय सेवा क्या कोई अलग चीज है ? हमारे स्टूडेंट्स बाडी बिल्डिंग करें, कैरेक्टर बिल्डिंग करें यूनिवर्सिटी में ऊंचे नम्बरों से पास हों यही राष्ट्रीय सेवा है या अलग कोई राष्ट्रीय सेवा नाम का जन्तु है जो कहीं और ले जाकर सीखना पड़ेगा ? हमारे वैदिक ऋषियों का कहना है : "पुरुषो वै राष्ट्र"

अगर इंडिविडुअल सुन्दर होगा तो नेशन खुद सुन्दर हो जायगी तो राष्ट्रीय सेवा का यह क्या पुछल्ला लगा रखा है यह हमें बतायें ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, पहले तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि राष्ट्रीय सेवा कोई जन्तु नहीं है । यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है और हमारा उद्देश्य यह है . . .

अध्यक्ष महोदय : जन्तु क्रियेट तो किया जा सकता है ।

श्री भक्त दर्शन : आप का मतलब क्या यह है, जो प्रश्न करने वाले हैं, वे उस श्रेणी के हैं ?

मेरा निवेदन है कि राष्ट्रीय सेवा का अर्थ यह है कि हमारे विद्यार्थियों के पास जो बहुत सा अवकाश रहता है जिसकी वजह से उनकी बुद्धि, उनकी सामर्थ्य, उनकी शक्ति बुरे रास्तों पर जाती है, उस का सदुपयोग किया जाय, उसे रचनात्मक दिशाओं में प्रेरित किया जाय और उसी के लिए कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है ।

श्री यशपाल सिंह : माननीय मंत्री जी कुछ यह समझायें कि जब कि इस वक्त लेबर भी ज्यादा है, कर्मचारी भी ज्यादा हैं, एम्प्लायमेंट नहीं है, जहां एक का काम है वहां के लिए 20 उम्मीदवार खड़े रहते हैं तो उन विद्यार्थियों को अपने लाइन से, अपनी शिक्षा से और अपने कैरेक्टर बिल्डिंग से हटा कर के कौन सी लाइन सौंपी जायगी ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, उनकी शिक्षा में कोई व्याघात नहीं पड़ेगा । जहां तक उनके चरित्र-निर्माण का प्रश्न है उस का भी ध्यान रखा जायगा पर प्रयत्न यह होगा कि उनका जो समय खाली है, उस का सदुपयोग किया जाय । मैं समझता हूं कि माननीय सदस्य को इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए ।

Shrimati Renuka Ray: The hon. Minister replied to say that the matter is under consideration. Since this has been under consideration from the time of the provisional Parliament and certain recent events in the student world show how necessary it is to harness their youthful energy to constructive purpose, I would like to know whether, instead of this being under consideration in the future, some steps will be taken immediately to introduce compulsory national service among the student community.

The Minister of Information and Broadcasting (Shri Raj Bahadur): We attach the highest importance to this particular programme because in the development of an integrated personality of the students, it is absolutely essential to do so. The very many examinations and studies that have been launched in this particular matter have led to the conclusion that it entails a good deal of expenditure. We are trying to reconcile the availability or the lack of availability of

finances with the desirability of the objective that we have in view and that is what is taking time.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या सरकार ने यह जानने का प्रयत्न किया है कि हमारे देश के विद्यार्थियों के पास अध्ययन के अतिरिक्त जो समय है, वह वर्ष में कितना खाली रहता है या दिन में कितना खाली रहता है, जिस के लिए कि यह अनिवार्य राष्ट्रीय सेवा के कार्यक्रम पर विचार किया जा रहा है ?

श्री भक्त दर्शन : जी हां, श्रीमन्; इस के बारे में डा० कोठारी की अध्ययन में एक अध्ययन दल काम कर रहा है, वह पूरे आंकड़े तैयार कर रहा है, लेकिन मोटे तौर पर साल में तीन-चार महीने खाली रहते है तथा प्रति दिन कुछ घंटे ऐसे होते हैं, जिन में वे खाली रहते हैं ।

Shri S. N. Chaturvedi: May I know whether the matter under consideration is only utilisation of the leisure and spare time of the students during the period of study or there is also some idea of putting them to national service for a year before the University or the Higher Secondary courses?

Shri Raj Bahadur: As I have said the essential objective is to develop the integrated personality of the student and as a part of the regular educational curriculum it should be incorporated in the studies.

श्री मौर्य : अध्यक्ष महोदय, आप के द्वारा मैं शिक्षा मंत्री से जानकारी चाहूंगा कि पहले एक सोशल सर्विस चली थी और अब यह नेशनल सर्विस की बात आई है, तो इन समाज सेवा और राष्ट्र सेवा में क्या अन्तर है तथा इस सेवा राष्ट्र सेवा में देश की जो बड़ी बड़ी समस्यायें हैं, जैसे इस देश में छुआ-छूत और जातीयता की समस्या है, तो क्या राष्ट्र सेवा में जिन विद्यार्थियों को लिया जायगा, वे छूआ-छूत दूर करने के लिए, जातीयता और साम्प्रदायिकता दूर करने के लिए भी कार्य करेंगे, क्या इन कार्यों को भी राष्ट्र सेवा में शामिल किया जायगा ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, राष्ट्र सेवा और समाज सेवा में कोई विशेष अन्तर नहीं है, दोनों एक ही अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं पर इस का एक राष्ट्र-व्यापी कार्यक्रम होगा ।

अध्यक्ष महोदय : क्या उस में यह प्रोग्राम भी होगा कि जातीयता और छुआ-छूत को भी मिटाया जाय ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, इन विस्तार की बातों पर अभी विचार किया जा रहा है ।

श्री मौर्य : साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता को दूर करने के लिए क्या विशेष प्रोग्राम उस में रहेगा, जिस में विद्यार्थियों की सहायता से उस क्षेत्र में कार्य किया जा सके ।

श्री राज बहादुर : राष्ट्र सेवा एक व्यापक अर्थ रखने वाला शब्द है, समाज सेवा इस के अन्तर्गत आती है । समाज सेवा के जो विभिन्न अंग है, उन का इस में समावेश है और मैं आशा करता हूं कि इस ओर भी ध्यान रखा जायगा ।

Shri P. Venkatasubbaiah: While formulating this national service scheme for the students to utilise their free time, may I know whether any item of exchange of students from one university to another university so as to promote not only linguistic harmony but also emotional integration, is also under consideration?

Shri Raj Bahadur: This may be taken into account and considered. It is a matter of detail.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ति : इस समय राष्ट्र सेवा के कार्यों में राष्ट्र रक्षण और अन्न उत्पादन सब से मुख्य हैं और इस समय जो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं या कालेजों के विद्यार्थी हैं, उनकी वर्ष में चार महीने से 7 महीने तक छुट्टी रहती है, क्या इस बात को

ध्यान में रख कर जो कृषि कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी हैं, उनको क्रियात्मक शिक्षा देने की दृष्टि से जब खेती की बुवाई होती है या पानी दिया जाता है, वह सेवा उन से लेने का क्या सरकार विचार कर रही है ?

श्री राज बहादुर : इस योजना का मुख्य अभिप्राय यही है, जिसका माननीय सदस्य ने संकेत किया है, उन को खेती की बुवाई में लगाया जाय या जिस काम पर लगाया जाय, यह विस्तार की बात है, किन्तु इस पर भी ध्यान रखा जा सकता है ।

श्री विभूति मिश्र : महात्मा गांधी ने कहा था कि देश में बेसिक एजूकेशन को चलाया जाय और सरकार ने उसको चलाया भी, लेकिन उस में सरकार का फेल्योर हो गया । क्या सरकार फिर उसी का नाम राष्ट्र सेवा रख कर बेसिक एजूकेशन के आधार पर इस को चलाने का विचार कर रही है ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, बेसिक एजूकेशन प्राइमरी कक्षाओं तक ही सीमित है, परन्तु यहां पर मुख्यत: यह प्रश्न है कि यूनीवर्सिटी के छात्रों और कालेजों के छात्रों का उपयोग किस प्रकार से किया जाय ।

Shri Swell: The hon. Minister has just said that he attaches very great importance to this programme and he was saying that this has been under the consideration of the Government since the Provisional Parliament. May we know what determines the importance of the scheme, whether it is the length of consideration or the speed with which Government is going to do something, and when are they going to complete consideration and bring forward a scheme?

Shri Raj Bahadur: I think the hon. Member might recall that a commission under the chairmanship of Shri C. D. Deshmukh was appointed and it had made certain recommendations. The total financial implication of those recommendations was an expenditure to the tune of Rs. 111 crores and that was the particular stumbling block that came in the way of their implementation. Recently, again, a study was undertaken under the chairmanship of Dr. Kothari, and a study group is now trying to study how far this can be implemented within the financial limitations that we are labouring under.

श्री तुलशीदास जाधव : पहले जिस तरह से स्कूलों और कालेजों में वीक में एक नीति शास्त्र का पीरियड होता था, अब नहीं होता है, तो क्या अब सरकार उसको इन्ट्रोड्यूस करने के लिए विचार कर रही है ?

श्री राज बहादुर : नीति शास्त्र और समाज सेवा का सम्बन्ध नहीं है ।

श्री बड़े : मैं यह जानना चाहता हूं कि दस हजार मील से जो विदेशी मिशनरीज 50 करोड़ रुपये की विदेशी सहायता लेकर यहां आते हैं और गांव गांव में जाते हैं, उनके मुकाबले में मैंने देखा है कि हमारी जितनी सर्विसिज होती हैं वे सब बड़े बड़े गांवों में काम करती हैं । विदेशी मिशनरीज आदिवासियों में जा कर काम करते हैं तथा उनका धर्म परिवर्तन करते हैं, तो क्या सरकार ने उन के बारे में भी कोई स्कीम बनाई है, ताकि वहां पर भी काम शुरू हो सके ?

श्री राज बहादुर : समाज सेवा को जितना व्यापक बनाया जा सकता है, बनाने की चेष्टा की जायगी । समाज की जो आवश्यकता है, उसका समावेश करने की चेष्टा की जायगी ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : जो विदेशी सहायता ले कर आते हैं और धर्म परिवर्तन करते हैं, उनको रोकने के लिए सरकार तैयार है या नहीं ?

अध्यक्ष महोदय : नेक्स्ट क्वेश्चन, श्री विश्व नाथ पाण्डेय ।